मेंढक और खजाना

मैक्स वेल्थुइज्सो

मेंढक और खजाना

मैक्स वेल्थुइज्सो

"चलो जल्दी करो और अपना नाश्ता खत्म करो, छोटे भालू," मेंढक ने कहा. "आज हम एक खजाने की खुदाई करेंगे!"

"खजाने की खुदाई? छोटे भालू ने पूछा. इसका क्या मतलब है?"

"मेरे साथ आओ फिर तुम्हें पता चल जाएगा," मेंढक ने कहा.

"हम एक गहरा गड्ढा खोदने जा रहे हैं," उसने समझाया. "हम तब तक खुदाई करेंगे, जब तक हमें खजाना नहीं मिल जाता है."

"पर अगर वहाँ कोई खजाना नहीं हुआ, तो?" छोटे भालू ने पूछा.

"हमें खजाना ज़रूर मिलेगा," मेंढक ने कहा. "मैं वादा करता हूँ."

एकाएक मेंढक रुका और उसने जमीन की ओर इशारा किया. "यही वो जगह है जहाँ हमें खजाना मिलेगा," उसने कहा.

"यहाँ पर! यह आपको कैसे मालूम?" छोटे भालू ने पूछा.

"मुझे पता है," मेंढक ने कहा.

मेंढक खोदने लगा. छोटा भालू उसे प्रशंसा से देखता रहा. खुदाई में बहुत मेहनत लग रही थी.

जल्द ही मेंढक थक गया.

"अब तुम्हारी बारी है, छोटे भालू," उसने कहा.

छोटा भालू थोड़ा सकपकाया, लेकिन फिर भी उसने कुदाल उठाई.

. . . और फिर वो बहादुरी से खुदाई करने लगा. लेकिन वो कुदाल उसके लिए बहुत बड़ी और बहुत भारी थी.

"तुम्हारी खुदाई बेकार है," मेंढक ने थोड़ी देर बाद कहा. "इस स्पीड से हमें खजाना कभी नहीं मिलेगा. तुम मुझे कुदाल लौटा दो."

फिर छोटा भालू देखता रहा और मेंढक गहरा, और गहरा खोदता रहा.

फिर मेंढक बहुत नीचे चला गया. उसे बड़ी मुश्किल से ही देखा जा सकता था.

"मेंढक!" छोटे भालू ने पूछा. "क्या तुम्हें अभी तक कोई खजाना मिला?"

"नहीं, अभी नहीं...” नीचे से मेंढक की आवाज आई. "सावधान, छोटे भालू, देखो मैं एक पत्थर फेंक रहा हूँ ..” लेकिन छोटा भालू सुन नहीं पाया. वो छेद में अंदर की ओर झुका, और . . .

... फिर वो छेद में गिर गया! फिर वे दोनों गहरे, अँधेरे छेद में बैठ गए.

"मुझे भूख लगी है," छोटे भालू ने कहा. "मुझे घर जाना है."

"वो हम नहीं कर सकते," मेंढक ने चुपचाप कहा. "क्योंकि यह छेद बहुत गहरा है."

"हम चढ़कर बाहर नहीं निकल सकते हैं. हम फंस गए हैं."

यह सुनकर छोटा भालू रोने लगा. "क्या हम हमेशा के लिए यहीं रहेंगे!" वो चिल्लाया.

"अब मैं फिर कभी चूहे के साथ मछली पकड़ने नहीं जा पाऊंगा और खरगोश मुझे बहुत याद करेगा!"

मेंढक भी डर गया. उसे नहीं पता था कि वो छोटे भालू को कैसे दिलासा दिलाए. "बहादुरी से काम लो छोटे भालू," उसने कहा. "चलो मदद के लिए हम चिल्लाते हैं. कोई-न-कोई हमारी आवाज़ जरूर सुनेगा." फिर दोनों मिलकर ज़ोर से चिल्लाए और चिल्लाए - लेकिन वहां कोई नहीं आया.
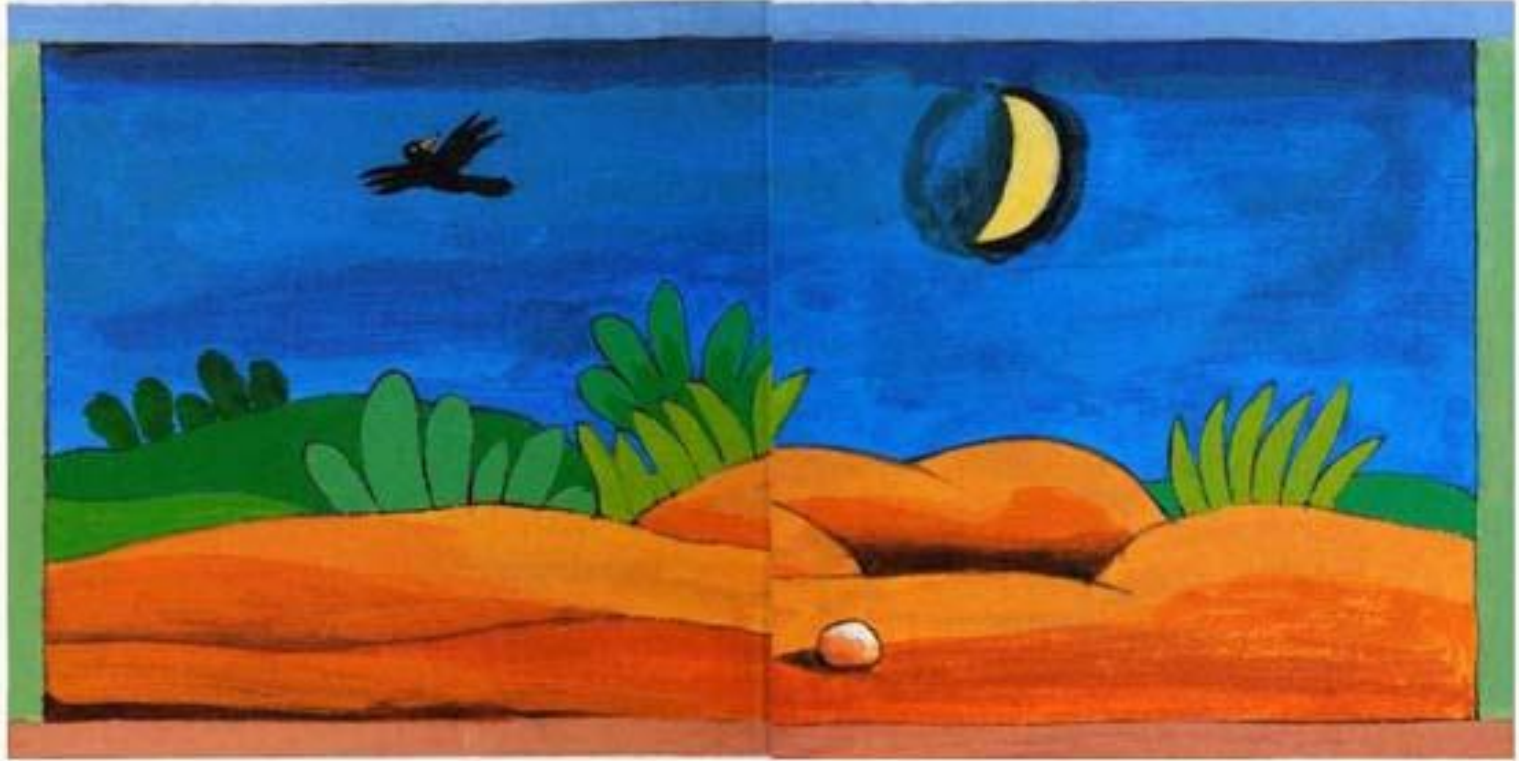
फिर मेंढक को एक और विचार आया. "चलो हम दोनों मिलकर गाते हैं." उसने कहा. "चलो हम गड्ढे में बैठकर खुशी के गीत गाएंगे." फिर चाँद निकल आया और रात हो गई.

मेंढक और छोटे भालू लगातार गीत गाते रहे. अंत में वे इतने थके गए कि उन्हें नींद आ गई, भले ही वे अपने घर वाले गर्म बिस्तरों से बहुत दूर थे ..

अगली सुबह, बत्तख टहलने के लिए बाहर निकली. वो उस रेत के टीले के पास आई.

"बड़ी अजीब बात है!” उसने कहा. "यह टीला कल तो यहाँ नहीं था!"

फिर उसने गहरे छेद को देखा और उसके बाद वो सुअर को खोजने गई.

सुअर छेद के अंदर की ओर झुका और ज़ोर से चिल्लाया, "हेलो? क्या कोई है?"

"हाँ हम हैं!" मेंढक और छोटा भालू एक साथ चिल्लाए. "हम - मेंढक और छोटा भालू अंदर फंसे हैं! हम खुद बाहर नहीं निकल सकते हैं!"

"मुझे लगता है कि हमें तुरंत चूहे को बुलाना चाहिए," सुअर ने कहा.
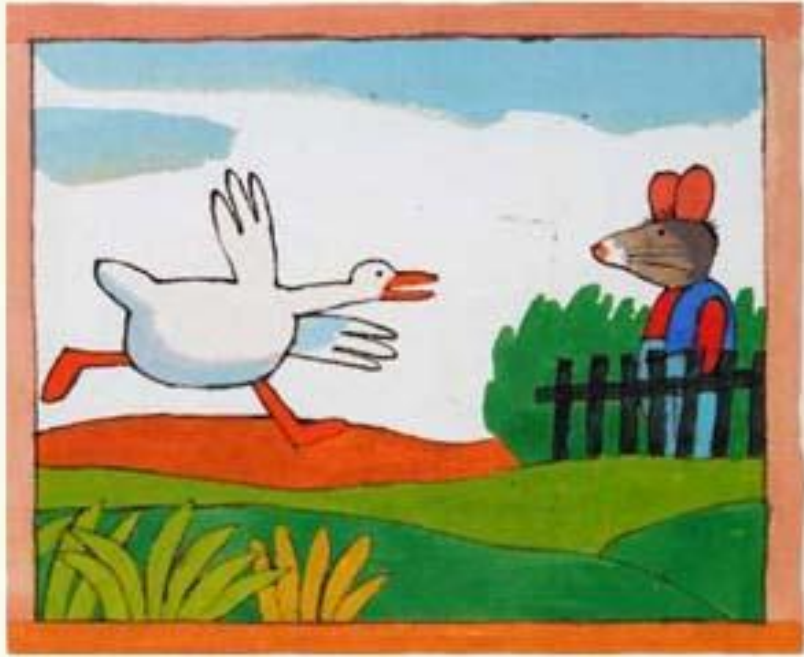
बतख तेज़ी से गई. वो ऊंची आवाज में चिल्लाई.

"चूहे! चूहे! जल्दी आओ! मेंढक और छोटा भालू एक छेद में फंसे हैं और वे बाहर नहीं निकल पा रहे हैं!"
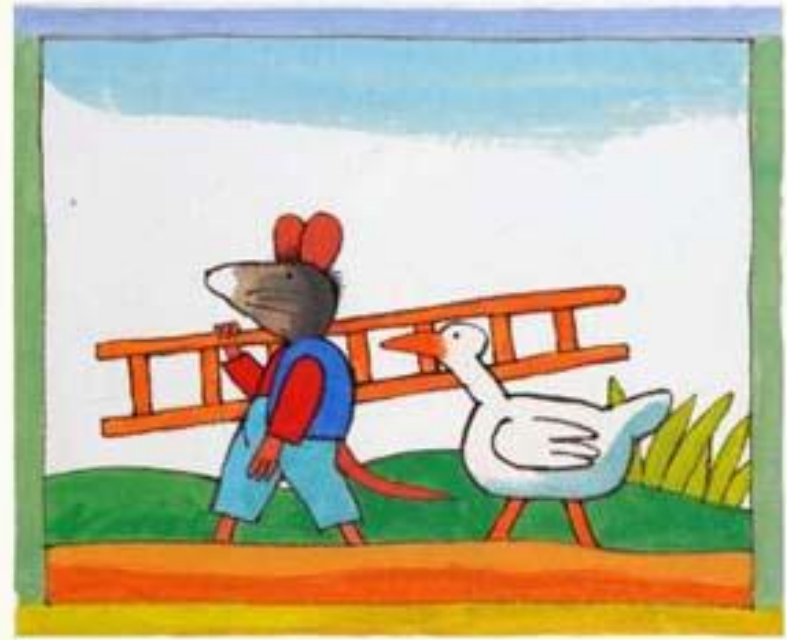
चूहे को अच्छी तरह पता था कि उसे क्या करना है. वो खलिहान से एक सीढ़ी लेकर आया और तुरंत बत्तख के साथ गहरे गड्ढे पर पहुंचा.

चूहे ने सीढ़ी को छेद में नीचे उतारा. पर गड्ढा इतना गहरा था कि जल्द ही सीढ़ी उसमें गायब हो गई.

"चढ़ो, छोटे भालू!" जानवरों ने ऊपर से कहा. "और मेंढक, तुम छोटे भालू के पीछे-पीछे आना! डरना मत. हम सब तुम्हारी मदद करेंगे!"

बड़े ध्यान से, छोटा भालू सीढ़ी चढ़ने लगा.
जब वो छेद के ऊपरी हिस्से के करीब पहुंचा,
तो उसके दोस्तों ने उसे सुरक्षित खींच लिया.
अब मेंढक की बारी थी. . .

जब मेंढक जमीन के ऊपर आया तो उसके सभी दोस्त खुशी से झूम उठे. "हुर्रे!" वे चिल्लाए, और चूहे ने छेद से बाहर निकलने में मेंढक की मदद की.

"लेकिन तुम वहाँ नीचे कर क्या रहे थे?" खरगोश ने उत्सुकतावश पूछा. "इतना गहरा छेद बेहद खतरनाक हो सकता है."

"हमें इस छेद को तुरंत भरना चाहिए."

"यह मेरी गलती थी," मेंढक ने चुपचाप कहा. "मैंने छोटे भालू से वादा किया था कि हमें नीचे खजाना मिलेगा. लेकिन हमें वहां कुछ भी नहीं मिला. हमने एक बड़ा और बेकार छेद बना डाला और यह सब मेरी ही गलती है." बेचारा मेंढक बहुत निराश लग रहा था.

"आह, लेकिन तुम्हें कुछ खजाना तो ज़रूर मिला होगा," चूहे ने गंभीरता से पूछा. फिर चूहे ने झुककर पास में पड़े पत्थर को उठाकर कहा, "यह पत्थर दस करोड़ वर्ष से ज़्यादा पुराना है!"'

चूहे ने पत्थर को अपनी आस्तीन पर पॉलिश किया. कुछ देर में पत्थर चमकने लगा. फिर उसने उसे मेंढक को सौंप दिया.

मेंढक को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ. वो चमकीले पत्थर को देखकर खुशी से झूम उठा.

धन्यवाद, चूहे," मेंढक ने गर्व से कहा. "लेकिन मुझे लगता है कि खजाना छोटे भालू का है. मैं यह पत्थर उसे दूंगा - क्योंकि उसने बड़ी बहादुरी दिखाई, और मैंने उसे खज़ाना देने का वादा किया था!"

समाप्त